विचार बिन्दु

कर्म, ज्ञान और भक्ति– ये तीनों जहाँ मिलते हैं वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है। –अरविंद

कहीं पर निगाहें, कहीं पर निशाना

दिनांक 23 सितंबर 2024 के संपादकीय में डॉ दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने 'एक देश, एक चुनाव' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। उन्होंने इसकी पृष्ठभूमि एवं इसके सरकार द्वारा घोषित लाभ को भी अच्छी तरह समझाया है। इस संपादकीय को पढ़ने से ऐसा लगता है कि 'एक देश एक चुनाव' का नारा मात्र एक नारा ही बन कर रह जायेगा और इसके धरातल पर उतरने की संभावना नगण्य है। यह वैसा ही नारा है जैसा ''अबकी बार 400 पार'' का नारा था।

एक देश एक चुनाव की बात प्रधानमंत्री ने गत स्वतंत्रता दिवस को लाल किले की प्राचीर से कहकर इस बात में सफलता अवश्य हासिल कर ली है कि वे देश की जनता का ध्यान मूल मुद्दों से भटका कर उन्हें निरर्थक चर्चा में उलझा कर रख दें ।

यह तो सरकार स्वयं भी समझती है कि व्यावहारिक रूप से पूरे देश में लोकसभा और विधानसभा का चुनाव एक साथ करा पाना संभव नहीं है। जो लोक सभा चुनाव, दो-तीन चरणों में हो सकते थे, उन्हें गत चुनाव में सात चरणों तक खींचा गया । फलस्वरूप, लगभग दो से अधिक महीने तक चुनावी प्रक्रिया ही चलती रही । ऐसी स्थिति में सरकार का यह कहना अमहत्वपूर्ण हो जाता है की बार-बार चुनाव होने से समय व्यर्थ होता है। जो सरकार लोकसभा का चुनाव भी एक दो चरणों में नहीं करा सकती, उसके लिए यह कहना कि वह समय को बर्बाद होने से बचाने के लिए ऐसा कर रही है, बेमानी होगा ।

वास्तव में सरकार यदि बार-बार होने वाले चुनाव को एक साथ करने की दिशा में गंभीर होती तो वह इतना तो कर ही सकती थी कि झारखंड और महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव जम्मू एवं कश्मीर तथा हरियाणा विधानसभा चुनाव के साथ ही करवा लेती। शायद ऐसा इसलिए नहीं किया गया कि प्रधानमंत्री जी पूरा समय राज्यों में चुनाव प्रचार के लिए देना चाहते हैं । इसी प्रकार गुजरात एवं हिमाचल विधानसभाओं के चुनाव, जो सदैव एक ही साथ होते रहे, गत कुछ वर्षों से इन्हें भी कुछ दिनों के अंतराल से कराया जाता है। इसके पीछे मंतव्य राजनीतिक लाभ के अतिरिक्त और कोई दिखाई नहीं देता।

सरकार ने यह घोषणा की है कि वह विधानसभा और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराने के लिए संविधान में आवश्यक संशोधन करेगी । यह उल्लेखनीय है कि कोविंद कमेटी की सिफारिश के अनुसार 15 संशोधन, संविधान में करने पड़ेंगे। इसके लिए दो बिल लाने होंगे- एक बिल विधानसभा और लोकसभा के संबंध में होगा और दूसरा पंचायत और स्थानीय निकायों के चुनाव को एक साथ करने के संबंध में होगा ।

संविधान के वर्तमान प्रावधान के अनुसार पंचायत और स्थानीय अधिकारियों के चुनाव कराने का दायित्व संबंधित राज्य सरकार का है, ना कि केंद्र सरकार का । यदि इसके लिए केंद्र सरकार को अधिकार प्राप्त करने हैं तो संविधान में संशोधन करना पड़ेगा। इसके लिए अलग बिल लाने की आवश्यकता पड़ेगी जिसे न केवल संसद द्वारा पारित कराना पड़ेगा अपितु आधे से अधिक राज्यों की विधानसभाओं से भी अनुमोदन कराना होगा। वर्तमान लोकसभा में भारतीय जनता पार्टी की कुल 240 सीटें हैं और अनेक राज्यों में विपक्षी दलों की सरकारें हैं। इन परिस्थितियों में न तो केंद्र सरकार इस स्थिति में है कि विधान मिल सभाओं और लोकसभा के चुनाव को एक साथ करने के लिए आवश्यक संविधान संशोधन पारित करवा सके एवं न ही वह इस स्थिति में है कि स्थानीय निकाय और पंचायत के चुनाव एक साथ करने के लिए आधे से अधिक राज्यों की विधासभाओं में इस संविधान संशोधन को पारित करवा सके ।

सैद्धांतिक रूप से हम यह मान भी लें कि ऐसा संभव हो जाता, तब भी इसे भारत के संघीय ढांचे पर प्रहार के रूप में तो देखा ही जाना चाहिए। यदि फिर भी ऐसा किया गया तो इसकी पूर्ण संभावना है कि इसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान के मूल ढांचे के विरुद्ध मानते हुए इसे निरस्त कर दिया जाएगा।

यदि वास्तव में सरकार चुनाव में शुचिता लाना चाहती है तो उसके लिए अनेक सुझाव चुनाव आयोग ने जो कई सालों से सरकार को दे रखे हैं, उन्हें ही लागू कर दे, जैसे राजनीतिक दल द्वारा किए गए खर्च की सीमा निर्धारित करना, अपराधिक प्रकृति के व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से वंचित करना आदि।

प्रत्येक राज्य एवं प्रत्येक पंचायत चुनाव में चुनावी मुद्दे अलग-अलग होते हैं एवं स्थानीय समस्याएं विभिन्न प्रकार की होती हैं। गत कुछ वर्षों से ऐसा माहौल बना दिया गया है कि केंद्रीय शीर्ष नेतृत्व के नाम पर देश का कोई भी चुनाव जीता जा सकता है। प्रधानमंत्री जी स्वयं ऐसे चुनावों में प्रचार हेतु पहुंच जाते हैं। इससे न केवल प्रधानमंत्री पद की गरिमा कम हुई है अपितु इससे सरकार के राजकाज पर भी विपरीत प्रभाव निश्चित रूप से पड़ा है। उदाहरण के लिए, हाल ही में कर्नाटक में हुए विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री ने उस राज्य का 34 बार दौरा किया। ऐसे समय में, जब अनेक गंभीर समस्याएं देश के सम्मुख उपस्थित हैं, वहां प्रधानमंत्री जी किसी एक राज्य के चुनाव में जीत हासिल करने के उद्देश्य से 34 बार चले जाएं तो उनकी प्राथमिकताओं पर प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है। विडंबना यह है कि, इस सबके बावजूद भी, कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी विजय प्राप्त नहीं कर सकी और वहां कांग्रेस की सरकार बन गई ।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व की वास्तविक नीयत चुनाव में खर्चा कम करना अथवा सरकारी कामकाज में रुकावट को रोकना नहीं है। यह तो केवल जनता को लुभाने के लिए एक मुखौटा कहा जा सकता है । वास्तविक नीयत तो ऐसा लगता है कि, अधिकारों के अधिकाधिक केंद्रीकरण करने की है । यह और कुछ नहीं, बल्कि राज्यों की स्वायत्तता को कम करना ही है । ऐसा करने का प्रयास पहले भी जीएसटी, नोटबंदी तथा अचानक लॉकडाउन के माध्यम से किया गया था। यह तो केंद्रीय नेतृत्व को समझ में आ भी जाना चाहिए कि अब केवल प्रधानमंत्री के चेहरे पर वोट हासिल करना उतना सरल नहीं रहा है। जब भी ऐसा करने का प्रयास किया गया, तो सोशल मीडिया के माध्यम से विपक्षी दल भी पूरी ताकत के साथ उनके पुराने वक्तव्यों के वीडियो चलाना प्रारंभ कर देते हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार के वादे जनता से किए गए और उनमें से अधिकांश अभी तक भी पूरे नहीं हो पाए हैं।

जब प्रधानमंत्री को लगा कि और कोई तरीका काम नहीं कर रहा है और सरकार सभी ओर से घिर रही है तो उन्होंने एक देश एक चुनाव का झुनझुना देश को पकड़ा दिया। इस बार के झुनझुने को सरकारी जामा पहनाने के लिए उससे संबंधित पूर्व राष्ट्रपति की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिश भी प्राप्त कर ली गई।

यह उल्लेखनीय है कि समिति का गठन इस बात के लिए नहीं किया गया कि एक देश एक चुनाव आवश्यक एवं व्यवहारिक है अथवा नहीं, अपितु यह सिफारिश देने के लिए किया गया कि ऐसा किस प्रकार किया जाएगा एवं उसके लिए क्या-क्या किए जाने की आवश्यकता है? सरकार ने संभवतया सोचा होगा कि पूर्व राष्ट्रपति की अध्यक्षता के कारण सभी दल उसकी सिफारिश पर सहमति प्रदान कर देंगे। ऐसा करते समय सरकार ने शायद इस बात का ध्यान नहीं रखा कि पूर्व राष्ट्रपति के कोई विशेषाधिकार नहीं हैं । उनकी अध्यक्षता वाली समिति के द्वारा दिए गए सुझावों के विरुद्ध, विभिन्न प्रबुद्ध व्यक्ति एवं राजनीतिक दल खुलकर अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। इन सबका सार यही है कि एक देश एक चुनाव का नारा केवल जुमला है जो कार्य रूप में परिणत होने की संभावना नहीं रखता है। इसका हश्र भी वही होने की आशंका है जैसा महिला आरक्षण बिल के बारे में हुआ था। महिला आरक्षण बिल संसद में पारित भी कर दिया गया किंतु वह कब लागू हो पाएगा इस बारे में कोई भी स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई है। जहां तक एक देश एक चुनाव का प्रश्न है उसका तो संबंधित संविधान संशोधन पारित होना भी लगभग असंभव है क्योंकि न तो संविधान संशोधन हेतु सरकार वांछित बहुमत जुटाने की स्थिति में है और न ही आधे से अधिक राज्य विधानसभाओं से उसका अनुमोदन कराना संभव दिखाई देता है ।

संविधान निर्माताओं ने भारत में संसदीय चुनाव प्रणाली का प्रावधान किया, किंतु वर्तमान नेतृत्व इसे राष्ट्रपति प्रणाली में परिवर्तित करने की नीयत रखता है। एक देश एक चुनाव का सबसे बड़ा खतरा जो देश के समक्ष उत्पन्न हो सकता है, वह क्षेत्रीय दलों और विशेष कर दक्षिण भारतीय दलों के अस्तित्व पर संकट का है। जब स्थानीय चुनाव भी केंद्रीय नेतृत्व के नाम पर लड़े जाएंगे, जिसकी कि बहुत अधिक संभावना है तो फिर स्थानीय नेतृत्व का महत्व वैसे ही बहुत कम हो जाएगा। यही सरकार का अघोषित एजेंडा भी है, ऐसा प्रतीत होता है।

प्रधानमंत्री अभी इस स्थिति को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाए हैं कि उन्हें पहले जैसा बहुमत संसद में प्राप्त नहीं है जितना गत 10 वर्षों में था। इसी कारण उन्हें स्वभावगत, अपने द्वारा लिए गए कई निर्णयों को कुछ ही समय में समर्थन के अभाव में वापस लेना पड़ा, चाहे वह ब्रॉडकास्टिंग रेगुलेशन बिल हो या फिर वक्फ बोर्ड से संबंधित कानून हो।

कुल मिलाकर हम यही कह सकते हैं कि एक देश एक चुनाव का नारा, केवल देश की जनता को भ्रमित करने के लिए है और वास्तविक मंशा राज्यों से केंद्र में अधिकाधिक अधिकारों को हस्तांतरित करने की है ताकि स्थानीय नेतृत्व और क्षेत्रीय राजनैतिक दल कमजोर हो जाएं।

यदि वास्तव में सरकार चुनाव में शुचिता लाना चाहती है तो उसके लिए अनेक सुझाव चुनाव आयोग ने जो कई सालों से सरकार को दे रखे हैं, उन्हें ही लागू कर दे,जैसे राजनीतिक दल द्वारा किए गए खर्च की सीमा निर्धारित करना, अपराधिक प्रकृति के व्यक्तियों को चुनाव लड़ने से वंचित करना आदि।

यह सामान्य सी बात है कि राजनीति में जो होता है वह दिखता नहीं और जो नहीं दिखता है वही होता है। एक देश एक चुनाव के संबंध में केंद्र सरकार की नीयत के बारे में तो यही कहा जा सकता है, ''कहीं पर निगाहें, कहीं पर निशाना।''

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

विज्ञान, लालच, बड़ा धन और जन स्वास्थ्य

डॉ. रामावतार शर्मा

विज्ञान ने हमारे जीवन और रहन-सहन में आमूल चूल परिवर्तन किए हैं। हम बैल गाड़ी, घोड़ा या गधा गाड़ियों से कहीं आगे बढ़ शक्तिशाली दुपहिया और चौपहिया वाहनों में द्रुत गति से आवागमन करने लगे हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था स्थापित हुई है और कितनी ही जानलेवा बीमारियों पर प्रभावकारी विजय प्राप्त हुई है। मोबाइल फोन और इंटरनेट ने हमारे जीवन को एक नया रूप दे दिया है। यहां एक बात नहीं भूलनी चाहिए कि विज्ञान की इन उपलब्धियों का महत्व इनके सदुपयोग में ही निहित है। वाहन तेज भागते हैं पर तीव्र गति बड़ी संख्या में लोगों का जीवन भी लील लेती है। इंटरनेट है तो पोर्न भी है, अश्लीलता का विस्तार हुआ है, झूठा प्रचार तंत्र विकसित हुआ है, ऑनलाइन ठगी पनपी है और इसके अलावा कितने ही अपराध और चरित्र की विकृतियों का जन्म हुआ है।

एक सामान्य विश्लेषण बता देगा कि इन सब नकारात्मक पक्षों के पीछे लालच और बड़े धन संग्रहण की मनोवृत्ति का ही हाथ है जिसके फलस्वरूप हम विज्ञान की इन उपलब्धियों का सकारात्मक उपयोग कर आनंदमय जीवन नहीं जी पा रहे हैं। इसके अलावा जो चिकत्सा विज्ञान हमें संक्रामक रोगों से बचा रहा है और दीर्घकालिक रोगों से मुक्ति पाने में में कुछ सहारा दे पा रहा है उसकी कितनी ही दवाओं का जबरदस्त दुरुपयोग नेपथ्य में तकरीबन हर व्यक्ति के जीवन का दीमक बन रहा है। जिस प्रकार से दीमक समय के साथ किसी भी विशाल पेड़ को नष्ट कर देती है उसी प्रकार रसायनों का दुष्प्रभाव जन स्वास्थ्य के लिए घातक होता है।

डी ई एस एक मानव निर्मित एस्ट्रोजन हार्मोन है। 1940 से 1959 के बीच अमेरिका के नर मुर्गों पर इस हार्मोन का जम कर दुरुपयोग हुआ क्योंकि इसके उपयोग से नर मुर्गे की छाती में फुलावट आ जाती थी और वह अधिक मांसल हो जाता था। चंद वर्षों में अमेरिका के कितने ही मर्द और गली के नर कुत्तों के स्तन बढ़ने लगे और उनकी आवाज पतली होने के साथ ही वे स्त्री की तरह व्यवहार करने लगे क्योंकि एस्ट्रोजन मुख्यतया एक मादा हार्मोन होता है।

अमेरिका सरकार को करोड़ों रुपए के चिकन खरीद कर नष्ट करने पड़े और मुर्गों में इस हार्मोन के उपयोग पर रोक लगी। अब लालची लोग डी ई एस का उपयोग पशुओं में करने लगे और धन लोभी फार्मा उद्योग ने बिना किसी व्यापक शोध के इस हार्मोन को महिलाओं में सुरक्षित गर्भ के लिए उपयोगी होने का प्रोपेगंडा प्रारंभ किया। परिणाम यह हुआ कितने ही युवक इस हार्मोन से प्रभावित हुए और वे नपुंसकता, गाइनेकोमाजिया (स्तन विकास) और कई स्त्रीगत लक्षणों से पीड़ित होने लगे। जिन गर्भवती महिलाओं को यह हार्मोन दिया गया उनमें से कई महिलाओं की संतानों के जननांगों में जन्मजात विकार पैदा हुए और ये बच्चे कभी भी सामान्य जीवन नहीं जी पाए, बालिकाओं की यूटरस और बालकों के टेस्टिकल्स अविकसित पाए गए।

इन बच्चों को ;डेज (डी ए एस) बेबीज; कहा गया। अति प्रभावशाली फार्मा और मीट लॉबी के चलते अमेरिकन सरकार सरकार ने बड़े अधूरे मन से 1979 में इस हार्मोन पर रोक लगाई क्योंकि कितने ही शोध यह प्रमाणित कर चुके थे कि इस तरह का मांस खाने से महिलाओं में क्लियर सेल कैंसर, और पुरुषों में टेस्टिकुलर कैंसर और असाध्य प्रजननहीनता हो सकती है।

डी ई एस आधिकारिक तौर पर तो प्रतिबंधित है पर अमेरिका सहित कई अन्य देशों में पशुओं को मोटा और मांसल बनाने के लिए अभी भी इसका गैर कानूनी निर्माण और उपयोग हो रहा है। भारत में पालतू पशुओं में डाइक्लोफेनेक के उपयोग से गिद्ध और चील विलुप्त से हो गए हैं, कौवों की संख्या में गिरावट आ गई है क्योंकि मृत जानवरों का डाइक्लोफेनक युक्त मांस खाने से उनके गुर्दे नष्ट हो जाते हैं। मनुष्य के गुर्दे बड़े होते हैं इसलिए नष्ट तो नहीं होंगे परंतु ऐसे पशुओं का दूध पीने से हमारे गुर्दों की कार्य क्षमता में तो गिरावट आना संभव है। लक्षण तो सामने नहीं आयेंगे पर घुन तो लग ही सकता है। बड़ा धन कमाने के लिए तथाकथित बड़े लोग सामान्य नागरिक के साथ क्या खेल खेलते हैं इसका लेखा जोखा मांगने वाला कोई नहीं है और अब तो सामान्य नागरिक भी उन्हीं की तरह आपाधापी में लग गया है। खेतों में विज्ञान विरोधी मात्रा में पेस्टीसाइड और अन्य केमिकल्स, दुकानों में मिलावट, दूध, घी, मिनरल वॉटर और शराब में मिलावट, सलाह में स्वार्थ और विचारों में जहर का हर तरफ वर्चस्व है। यह एक तरह की त्रासदी है कि लोगों ने जीवन में आनंद को तज कर वस्तुओं के संग्रहण को अपना लिया पर याद रखना चाहिए कि हर वस्तु समय के साथ घिसती है, उसका ह्रास होता है जबकि आनंद चिर युवा है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

बनवारी खामोश को मनुज साहित्य और कृष्णानद व्यास को मनुज कला सम्मान मिला

साहित्यकार राजेन्द्र मुसाफ़िर के बाल-कहानी संग्रह ''आजादी का मोल'' का लोकार्पण किया

जयपुर। डॉ. ओ.पी शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट, चूरू की ओर से नगर-श्री चूरू के सभागार में साहित्य-कला समारोह आयोजित किया गया। कवि-गीतकार बनवारीलाल शर्मा खामोश को मनुज साहित्य-सम्मान 2024 और ख्यातनाम तबलावादक पंडित कृष्णानंद व्यास को मनुज कला-सम्मान अर्पित किया गया। सम्मान स्वरूप साहित्य और संगीत की दोनों हस्तियों को सम्मान-पत्र, शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न एवं ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये भेंट किये गये। दोनों सम्मानितजनों को अपने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए अलंकृत किया गया।

डॉ. ओ.पी शर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट, चूरू की ओर से नगर-श्री चूरू के सभागार में आयोजित साहित्य-कला समारोह में बनवारीलाल शर्मा खामोश व तबलावादक पंडित कृष्णानंद व्यास को सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, चूरू के सचिव डॉ. शरद व्यास ने साहित्य और संगीत के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि विज्ञान और वाणिज्य विषय के लोग समृद्ध हो सकते हैं, परन्तु खुशहाल होने के लिए कला का आंचल पकड़ना ही पड़ता है। कला का आंचल पकड़े बिना व्यक्तिव में पूर्णता नहीं आती। उन्होंने वरिष्ठ कला-साधकों के आदर सम्मान को श्रेयस्कर बताते हुए वसीम बरेलवी के शेर को दोहराया कि 'देखना साथ ही छूटे न बुजुर्गों का कहीं, पत्ते पेड़ों पे लगे हों तो हरे रहते हैं। समारोह अध्यक्ष रंगकर्मी डॉ. प्रमोद बाजोरिया ने अपनी राजस्थानी कविता की पंक्तियों में डॉ. ओ. पी.शर्मा और दोनों सम्मानित साधकों की प्रतिभा और अवदान को पिरोते हुए सदन को भावविभोर किया।

सम्मानित हुए साहित्यकार खामोश ने अपने रचनाकर्म के प्रारंभिक संस्मरणों को साझा करते हुए कहा कि मेरी अभिरुचि को समृद्ध करने में स्मृतिशेष डॉ. ओ.पी. शर्मा का बहुत बड़ा योगदान है। डॉ. शर्मा ने मेरी प्रतिभा को पहचान कर अपने निजी पुस्तकालय से पुस्तक-पठन की सुविधाएं उपलब्ध करवाई। उन्होंने कहा कि उत्कृष्ट साहित्य-सर्जन तभी हो सकता है जब हम सद्साहित्य का अध्ययन करते रहें। मशहूर तबला-वादक कृष्णानंद व्यास ने तबला-वादन को कठिन विधा बताते हुए इसके बोल की बारीकियां प्रस्तुत की।

उन्होंने सम्मान का आभार व्यक्त करते हुए अनेक सस्मरण साझा किये। इस अवसर पर साहित्यकार राजेन्द्र मुसाफ़िर के हिन्दी बाल-कहानी संग्रह 'आजादी का मोल' का लोकार्पण भी हुआ। अतिथियों का स्वागत करते हुए राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफिर' ने कहा कि साहित्य और अन्य कलाओं के लिए अपना जीवन होम करने वाले साधकों का सम्मान करना संस्थाओं और समाज का कर्तव्य है। उन्होंने ट्रस्ट की गतिविधियों की जानकारी भी दी। रवीन्द्र शर्मा ने खामोश और पंडित व्यास के कृतित्व और व्यक्तित्व का परिचय दिया।

प्रबन्धन ट्रस्टी डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, श्यामसुन्दर शर्मा दुराना, श्यामसुंदर शर्मा नगर-श्री, विनोद मेहता, जितेन्द्र मेहता, डॉ. कमल वषिष्ठ, बृजेन्द्र दाधीच, रवीन्द्र शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, कृष्ण कुमार ग्रोवर, आषुतोष, ओमप्रकाष तंवर आदि ने दोनों सम्मान्य व अतिथियों का स्वागत-अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में विनोद व्यास ने सरस्वती वंदना की प्रस्तुति दी। नारायण शर्मा द्वारा खामोश रचित ग़जलों का सांगीतिक प्रस्तुतीकरण हुआ ललित व्यास ने तबले पर संगत की।

ट्रस्टी कृष्ण कुमार ग्रोवर ने कला और संस्कृति की महत्ता पर प्रकाष डालते हुए मंचस्थ एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन लेखक और विचारक प्रोफेसर कमलसिंह कोग्रारी ने किया। इस अवसर पर ऊषा शर्मा, अनसुईया शर्मा, पुष्पा शर्मा, उमा शर्मा, मीना सोनी, लाजवंती मुद्गल, इंदिरा सिंह बाबूलाल शर्मा, दुलाराम सहारण, गुरुदास भारती, चंद्र प्रकाश ढंढ, हरिसिंह, एडवोकेट रमेश सोनी, हरिसिंह, इदरीस खत्री, विजयकान्त, शैलेन्द्र माथुर, सोमेश शर्मा, सज्जन लाटा, राकेश शर्मा दुराना, सहित अनेक प्रबुद्ध श्रोता उपस्थित थे। आरंभ में अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह का विधिवत शुभारंभ किया।

आलवाड़ा के सीनियर स्कूल में दो साल से शिक्षकों के पद रिक्त

- **गुस्साए विद्यार्थियों व ग्रामीणों ने स्कूल के मैन गेट पर ताला जड़ा**
- **सरकार एवं विभागीय अधिकारियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की**

सायला, (निसं)। सायला उपखण्ड क्षेत्र के आलवाड़ा गांव स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में करीब दो साल से शिक्षकों के रिक्त पदों को लेकर गुस्साएं विद्यार्थियों व ग्रामीण ने सोमवार को विद्यालय के मैन गेट पर ताला लगाकर धरना दिया।

जानकारी के अनुसार राउमावि आलवाड़ा में पिछले दो साल से शिक्षकों के पद रिक्त चल रहे हैं। स्कूल में शिक्षकों के कुल 8 पद है, जिसमें सिर्फ 3 पद पर ही शिक्षक कार्यरत है तथा कुल 5 पद पिछले 2 साल से रिक्त चल रहे हैं। जिससे विद्यार्थियों की पढ़ाई भी नहीं हो पा रही है। इसको लेकर सरपंच, विद्यार्थियों व ग्रामीणों ने कई बार जिला शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन देकर अवगत कराया तथा करीब चार माह पहले जालोर आए शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को भी ज्ञापन देकर ग्रामीणों ने रिक्त पदों के बारे में अवगत कराया था। जिस पर उन्होंने जल्दी समाधान का आश्वासन दिया था, लेकिन आज दिन तक कोई समाधान नहीं हुआ, जिससे गुस्साए विद्यालय के 260 से अधिक विद्यार्थियों व ग्रामीणों ने विद्यालय के गेट पर ताला लगाकर विद्यालय के आगे धरने पर बैठ गये तथा सरकार एवं विभागीय अधिकारियों के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। सूचना पर जीवाणा उप तहसीलदार हुकमसिंह, शिक्षा विभाग के आरपी सुरेशचन्द्र बेनीवाल, हेड कांस्टेबल पब्बाराम व कांस्टेबल मोहित कुमार मौके पर पहुंचे तथा विद्यार्थियों व ग्रामीणों से समझाईश का प्रयास किया, लेकिन विद्यार्थियों ने शिक्षकों की मांग पूरी नहीं होने तक विरोध प्रदर्शन जारी रखने की चेतावनी दी, जिस पर सीबीईओ भंवरलाल परमार ने तालियाना, जालमपुरा, तिलोडा व खेतलावास पीईईओ क्षेत्र की स्कूलों से एक-एक शिक्षक को शैक्षणिक व्यवस्थार्थ आदेश जारी कर आलवाड़ा लगाया। इसके बाद विद्यार्थियों एवं ग्रामीणों ने धरना समाप्त किया।

आलवाड़ा के राउमावि में पिछले 2 साल शिक्षकों के रिक्त पद है। हालांकि शिक्षा विभाग द्वारा ग्रामीणों की मांग पर शैक्षणिक व्यवस्था के तहत सप्ताह में तीन-तीन दिन के लिए शिक्षकों को लगाया था। जो अभी स्कूलों में खेल प्रतियोगिताओं के चलते व्यस्त हो गए। जिससे राउमावि आलवाड़ा में विद्यार्थियों की पढ़ाई चौपट हो रही थी। ऐसे में ग्रामीणों की मांग पर सीबीईओ भंवरलाल परमार द्वारा कार्य व्यवस्थार्थ चार शिक्षकों को लगाया गया, जिसमें राउप्रावि खेतलावास नारवाडा के शिक्षक नवजोतसिंह, राप्रावि चौधरीयों की बेरी आकवा के शिक्षक फरसाराम, राउप्रावि केरली नाडी दहिवा के शिक्षक प्रमोद कुमार एवं राउप्रावि भादरवा बेरा तिलोडा के शिक्षक रामरस गुर्जर को आलवाड़ा लगाया गया।

भंवरलाल परमार सीबीईओ सायला का कहना है कि आलवाड़ा के राउमावि में शिक्षकों के पद रिक्त है, जिसको लेकर विद्यार्थी एवं ग्रामीण स्कूल के ताला लगाकर धरने पर बैठे थे। उनकी मांग पर आसपास के पीईईओ क्षेत्र से शैक्षणिक व्यवस्थार्थ चार शिक्षकों को लगाया गया। जिस पर धरना समाप्त हो गया।

राशिफल मंगलवार 24 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 9:54 तक, व्यतिपात योग रात्रि 1:26 तक, बव करण दिन 12:39 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:55 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर और राजयोग सूर्योदय से दिन 12:39 तक है। यहघट योग रात्रि 9:54 से सूर्योदय तक है। आज अष्टमी का श्राद्ध है। व्यतिपात पुण्यं है और महालक्ष्मी व्रत समाप्त होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:19 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 1:39 तक, शुभ 3:18 से 4:48 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:18

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति एवं व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह

आर्थिक/वित्तिय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बना रहेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक मामलों में उचित परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

वृश्चिक

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

मीन

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।